ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-3*AUGUST-2014

सिद्धार्थ नगर जनपद में साक्षरता प्रतिरूप

संजय कुमार राय
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग
एस.डी.पी.जी. कालेज मठलार,
देवरिया

सारांश

साक्षरता मानव के सर्वांगण विकास की धुरी है। यह मनुष्य के सोच–विचार और कार्य करने की योग्यता में वृद्धि के साथ ही उसे नवीन खोजों की दिशा में प्रवृत्त करती है, जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

मुख्य शब्द : सिद्धार्थ नगर जनपद, साक्षरता प्रतिरूप।

प्रस्तावना

समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढिवादिता, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक भेद–भाव, निर्धनता आदि को दूर करने में साक्षरता का महत्व सर्वोपरि है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद सिद्धार्थनगर की स्थापना 29 दिसम्बर 1988 को बस्ती जनपद के उत्तरांचल भाग को पृथक करके किया गया। यह जनपद उ0प्र0 के पूर्वांचल में नेपाल की सीमा पर बस्ती मण्डल में अवस्थित एक विकासशील जनपद है। जनपद का विस्तार 27^0 7′ और 27^0 31′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 11′ और 83^0 8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है, जिसका क्षेत्रफल 2956 वर्ग कि0मी0 जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.2 प्रतिशत है। जनपद के उत्तर में नेपाल देश, पूर्व में महराजगंज, दक्षिण में बस्ती तथा बलरामपुर जनपद की सीमाएँ हैं। दक्षिणी–पश्चिमी कोण पर गोण्डा जिले की सीमा भी लगती है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र पाँच तहसीलों, 14 विकास खण्डों, 1015 ग्राम पंचायतों व 152 न्याय पंचायतों में विभक्त है।

साक्षारता पतिरूप

विश्व के विभिन्न देशों की साक्षरता वितरण में क्षेत्रगत विषमता पायी जाती है, जो जनांकिकी, सामाजिक, आर्थिक तथ्यों से मिलने वाली विषमता का परिणाम होती है। साथ ही साक्षरता के वितरण प्रतिरूप एवं प्रकृति तथा सामाजिक, आर्थिक दशाओं के तुलनात्मक अध्ययन स यह स्पष्ट होता है कि अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देश एवं समाज में विभिन्न जनांकिकीय तथ्यों जैसे लिंगानुपात, जातियों की संरचना, और व्यावसायिक संरचना के अनुसार साक्षरता में अपेक्षाकृत अधिक विषमता पायी जाती है, जबकि आर्थिक दृष्टि से विकसित देश एवं समाज मे विषमता कम दृष्टिगत होती है। भारत जैसे विकासशील देशों में ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या में साक्षरता के विकास की पर्याप्त विषमता पायी जाती है। प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता अधिक मिलती है। जिसका प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरों में सुविधाओं एवं अन्य भौतिक साधनों की प्रचुरता है।

प्रस्तुत अध्याय में सिद्धार्थनगर जनपद के साक्षरता प्रतिरूप को तहसील एवं विकासखण्ड स्तर पर विश्लेषित किया गया है जो जनगणना वर्ष 2001 पर आधारित है। वर्ष 1991 में सिद्धार्थनगर जनपद की कुल जनसंख्या 1707885 थी जिसमें 892981 पुरुष तथा 814904 स्त्रियाँ थी तथा जनपद की सम्पूर्ण साक्षरता 27.09 प्रतिशत थी जिसमें 40.91 प्रतिशत पुरुष तथा 11.84 प्रतिशत स्त्रियाँ थी। वर्ष 2001 में जनपद की जनसंख्या 2040085 जिसमें 1047165 पुरुष तथा 992920 स्त्रियाँ है तथा साक्षरता 42.18 प्रतिशत है जिसमें 56.87 प्रतिशत पुरुष तथा 27.08 प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। वर्ष 2001 में सिद्धार्थनगर जनपद के आकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र के सभी विकास खण्डों में सबसे अधिक साक्षरता विकास खण्ड नौगढ़ में 66.65 प्रतिशत तथा सबसे कम साक्षरता विकास खण्ड खुनियाव में 34.02 प्रतिशत है (तालिका–1 एवं चित्र–1)।

क्षेत्र के मानचित्र एवं तालिकाओं को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्त्री–पुरुष की साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण में

पर्याप्त अन्तर है। साक्षरता के वितरण पर परिहवन तंत्र, संचार एवं भौगोलिक स्थितियों का संयुक्त प्रभाव दृष्टिगत होता है।

तालिका–1

2001 में जनपद की साक्षरता की स्थिति

विकास खण्ड	साक्षरता प्रतिशत में
नौगढ़	66.65
बर्डपुर	39.19
जोगिया	42.37
उसका बाजार	50.06
लोटन	37.98
डुमरियागंज	47.81
भनवापुर	47.76
बांसी	44.51
मिठवल	46.60
खेसरहा	44.49
इटवा	37.98
खुनियाव	34.20
शोहरतगढ़	36.53
बढ़नी	37.82

सूत्र–

$$\text{साक्षरता:} \frac{\text{साक्षर जनसंख्या}}{\text{5 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों की जनसंख्या}} \times 100$$

जनसंख्या वर्ष 2001 में साक्षरता का वितरण प्रतिरूप

अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में साक्षरता का प्रतिशत कितना है एवं साक्षरता का क्षेत्रीय वितरण कैसा है? इन सब तथ्यों का अध्ययन एवं निरीक्षण करना यहाँ पर अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। वर्ष 2001 में जनपद की कुल साक्षरता 42.29 प्रतिशत है, जिसमें 56.87 प्रतिशत पुरुष तथा 27.08 प्रतिशत स्त्री साक्षरता है। अध्ययन को सुविधाजनक बनाने हेतु कुल जनसंख्या में साक्षर जनसंख्या को आधार मानकर क्षेत्रीय वितरण का विभाजन तीन वर्गों में किया गया है जो निम्नलिखित है–साक्षरता के क्षेत्र (40 प्रतिशत या उससे अधिक)

1. मध्यम साक्षरता के क्षेत्र (30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत के बीच)
2. निम्न साक्षरता के क्षेत्र (30 प्रतिशत से कम)

तालिका–2

कुल जनसंख्या में साक्षर जनसंख्या–2001

(प्रतिशत में)

ग्रामीण	उच्च साक्षरता	मध्यम साक्षरता	निम्न साक्षरता
इटवा	–	37.98	–
खुनियाव	–	34.02	–
डुमारियागंज	47.81	–	–
भनवापुर	47.76	–	–
बांसी	44.51	–	–
मिठवल	46.60	–	–
खेसरहा	44.49	–	–
बढ़नी	–	37.82	–
शोहरतगढ़	–	36.53	–
वर्डपुर	–	39.19	–
नौगढ़	66.65	–	–
जोगिया	42.37	–	–
उसका बाजार	50.06	–	–
लोटन	–	37.38	–

उच्च साक्षरता वाला क्षेत्र

जनगणना वर्ष 2001 में इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद के 8 विकासखण्ड आते हैं जिसमें नौगढ़ तहसील के तीन विकास खण्ड, नौगढ़ (66.65 प्रतिशत), जोगिया (42.37 प्रतिशत) एवं उसका बाजार (50.06 प्रतिशत) तथा बांसी तहसील विकास खण्ड बांसी (44.51 प्रतिशत), मिठवल (46.60 प्रतिशत), खेसरहा (44.49 प्रतिशत), डुमरियागंज के दोनों विकास खण्ड भनवापुर (43.76 प्रतिशत), डुमरियागंज (47.81 प्रतिशत) शामिल है।

इस समय तक जनपद में मार्गो का विकास समुचित मात्रा में हो जाने के कारण आवागमन के साधनों के विकास के साथ–साथ शिक्षा का भी प्रसार व्यापक मात्रा में हो गया था। इस श्रेणी में यद्यपि बांसी की जनसंख्या अधिक है परन्तु व्यवसायगत कार्यों में संलग्न हो जाने के कारण यहां के निवासी शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाये। जबकि यहां पर एक परास्नातक महाविद्यालय तथा तीन इण्टर मीडिएट कालेज है। (तालिका सं0–2)

मध्यम साक्षरता वाला क्षेत्र

इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद के शेष सभी 6 विकास खण्ड शामिल है। जिसमें इटवा तहसील के दोनों विकास खण्ड इटवा (35.73 प्रतिशत), खुनियावं (34.02 प्रतिशत), नौगढ़ तहसील के दो विकास खण्ड लोटन (37.98 प्रतिशत), वर्डपुर (39.19 प्रतिशत) एवं बांसी तहसील के विकास खण्ड बांसी (39.49 प्रतिशत) तथा तहसील शोहरतगढ़ के विकास खण्ड शोहरतगढ़ (36.53 प्रतिशत) एवं बढ़नी विकास खण्ड की साक्षरता (37.82 प्रतिशत) सम्मिलित है।

इस वर्ग अन्तर्गत वे विकास खण्ड आते हैं जो जिला मुख्यालय से दूर हैं। वर्डपुर को छोड़कर इन विकासखण्डों में आन्तरिक परिवाहन तथा शिक्षा का प्रसार समुचित ढंग से नही हो पाया है।

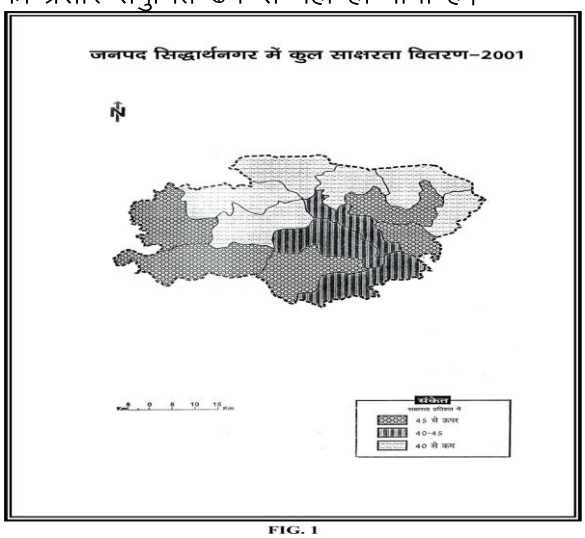

FIG. 1

निम्न साक्षरता वाले क्षेत्र

इसके अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकासखण्ड नहीं आता है।

पुरुष जनसंख्या में साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत (2001)

जनपद की दूसरी जनगणना में पुरुष 56.87 प्रतिशत है, जिसका विकास खण्डवार वितरण निम्नलिखित है–

उच्च पुरुष साक्षरता वाले क्षेत्र

इस वर्ग के अन्तर्गत 45 प्रतिशत या इससे अधिक साक्षरता वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत जनपद के सम्पूर्ण विकासखण्ड शामिल है। इटवा 48.01 प्रतिशत, खुनियाव 47.91 प्रतिशत, लोटन 52.16 प्रतिशत, बर्डपुर 52.59 प्रतिशत, नौगढ़ 93.72 प्रतिशत, जोगिया, 58.62 प्रतिशत, उसका बाजार 68.84 प्रतिशत, बांसी 54.02 प्रतिशत, मिठवल 67.07 प्रतिशत, खेसरहा 60.74 प्रतिशत, भनवापुर 51.33 प्रतिशत, डुमरियागंज 63.93 प्रतिशत, बढ़नी 51.15 प्रतिशत, शोहरतगढ़ 54.43 प्रतिशत पुरुष साक्षरता है। मध्यम तथा निम्न पुरुष साक्षरता वाले क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकास खण्ड शामिल नहीं है।

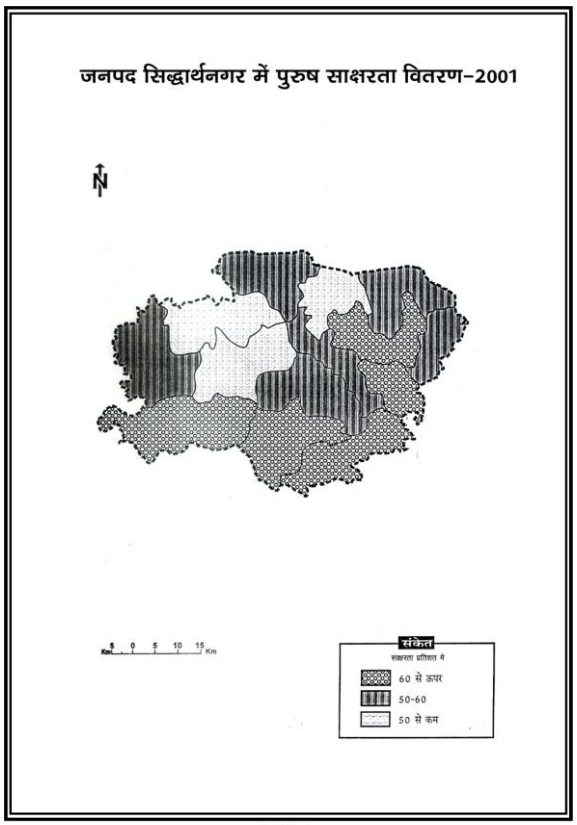

FIG. 2

इस दशक में यातायात के विकास के साथ ही नौकरी तथा अन्य प्रकार के पेशेवर पेशे की तरफ लोगों के आकर्षित होने के कारण उच्च शिक्षा के लिए इस वर्ग में शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़ा जिस कारण शिक्षा की बढ़ोत्तरी रही। इटवा तथा खुनियाव को छोड़कर (पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण) शेष सभी विकास खण्डों में साक्षर जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। (तालिका सं0–3 चित्र सं0–2)

तालिका–3

पुरुष साक्षरता प्रतिशत–2001

विकास खण्ड	उच्च साक्षरता	मध्यम साक्षरता	निम्न साक्षरता
इटवा	48.01	–	–
खुनियाव	47.91	–	–
लोटन	52.16	–	–
वर्डपुर	52.59	–	–
नौगढ़	80.88	–	–
जोगिया	58.62	–	–
उसका बाजार	68.84	–	–
बांसी	59.75	–	–
मिठवल	67.07	–	–
खेसरहा	60.07	–	–
भनवापुर	51.33	–	–
डुमरियागंज	63.93	–	–
बढ़नी	51.15	–	–
शोहरतगढ़	45.88	–	–

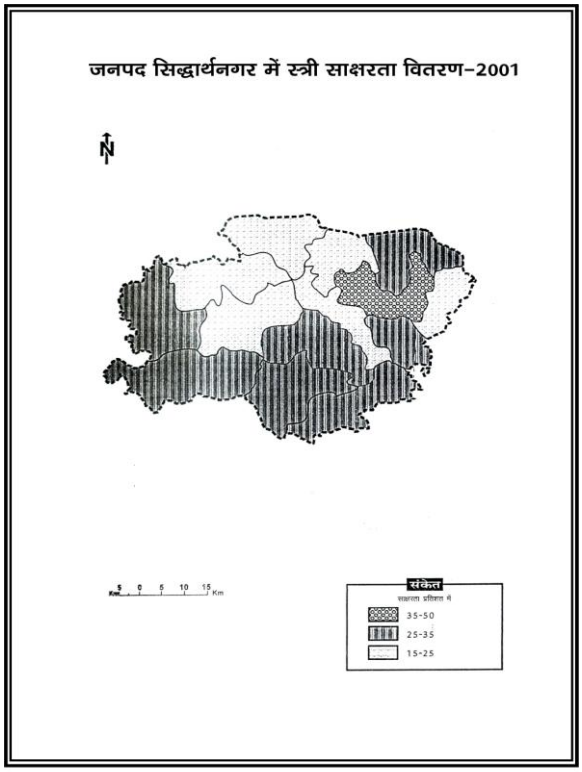

FIG. 3

स्त्री जनसंख्या में स्त्री साक्षरता का प्रतिशत (2001)

जनगणना वर्ष 2001 में जनपद की स्त्री साक्षरता 27.08 प्रतिशत है, जिसका विकास खण्डवार वितरण निम्नलिखित है–

उच्च स्त्री साक्षरता वाले क्षेत्र

इस वर्ग के अन्तर्गत जनपद के 8 विकासखण्ड शामिल है। इसमें नौगढ़ तहसील के विकास खण्ड वर्डपुर (25.53 प्रतिशत), नौगढ़ (39.41 प्रतिशत), उसका बाजार (29.25 प्रतिशत), बांसी तहसील के विकास खण्ड मिठबल (30.28 प्रतिशत), खेसरहा (27.08 प्रतिशत), तहसील डुमरियागंज के

भवनापुर (33.04 प्रतिशत), डुमरियागंज (30.79 प्रतिशत) तथा तहसील शोहरतगढ़ के विकास खण्ड शोहरतगढ़ (26.90 प्रतिशत) (तालिका–4 चित्र–2) आते हैं–

मध्यम स्त्री साक्षरता वाले क्षेत्र

इसके अन्तर्गत जनपद के शेष 6 विकासखण्ड शामिल है। इसमें इटवा तहसील के विकास खण्ड इटवा (22.09 प्रतिशत), खुनियावं (20. 55 प्रतिशत) नौगढ़ तहसील के विकास खण्ड लोटन (21.10 प्रतिशत), जोगिया (23.78 प्रतिशत), तहसील बांसी के विकास खण्ड बांसी (24.61 प्रतिशत), तहसील शोहरतगढ़ के विकास खण्ड शोहरतगढ़ (23. 78 प्रतिशत) तथा बढ़नी की स्त्री साक्षरता (22.92 प्रतिशत) सम्मिलित हैं।

निम्न स्त्री साक्षरता वाले क्षेत्र के अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकास खण्ड शामिल नहीं हैं।

स्त्री साक्षरता एवं शिक्षा के लिए शासन द्वारा किये गये प्रयासों एवं कार्यक्रमों तथा प्रोत्साहन स्वरूप दिये जाने वाले अनुदान के अलावां आवागमन के साधनों एवं मार्गों का विकास एवं निकटस्थ शिक्षा केन्द्रों की स्थापना के कारण इस जनगणना वर्ष में स्त्री साक्षरता में बढ़ोत्तरी हुई है।

तालिका–4

कुल स्त्री जनसंख्या में स्त्री साक्षरता का प्रतिशत–2001

विकास खण्ड	उच्च साक्षरता	मध्यम साक्षरता	निम्न साक्षरता
इटवा	–	22.09	–
खुनियाव	–	20.50	–
लोटन	–	21.10	–
वर्डपुर	25.53	–	–
नौगढ़	48.29	–	–
जोगिया	–	23.78	–
उसका बाजार	29.95	–	–
बांसी	28.53	–	–
मिठवल	30.28	–	–
खेसरहा	27.08	–	–
भनवापुर	33.04	–	–
डुमरियागंज	30.79	–	–
बढ़नी	–	22.92	–
शोहरतगढ़	–	23.78	–

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि जनपद में स्त्री एवं पुरुष साक्षरता के विकास के लिए अनेक प्रयासों के बावजूद इनकी समानता में पर्याप्त अन्तर है। जहाँ 1991 में सम्पूर्ण साक्षरता 27.09 प्रतिशत रही, जिसमें पुरुष साक्षरता 40.91 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 11.84 प्रतिशत थी जबकि 2001 में सम्पूर्ण साक्षरता 42.29 प्रतिशत तथा पुरुष साक्षरता 56.87 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता 27.08 प्रतिशत हो गयी। यद्यपि शासन के अनेक प्रयासों के फलस्वरूप स्त्री साक्षरता में इस दशक में बढ़ोत्तरी हुई है फिर भी इसके बावजूद स्त्री पुरुष साक्षरता में काफी अन्तर रहा जो यह दर्शाता है कि पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की साक्षरता लगभग आधी है। स्त्री–पुरुष साक्षरता के अन्तर में क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक दशायें उत्तरदायी है जिसके कारण स्त्री एवं पुरुष साक्षरता में पर्याप्त अन्तर है।

उच्च साक्षरता हेतु उच्च नगरीकरण, अच्छी प्रशासनिक व्यस्था, शिक्षा की उत्तम व्यवस्था एवं अच्छी आर्थिक परिस्थितयाँ उत्तरदायी है। जबकि निम्न साक्षरता उन क्षेत्रों से सम्बद्ध है जो अविकसित एवं अशिक्षित, निम्न स्तरीय कृषि अर्थ–व्यवस्था के प्रतिफल हैं।

Referecnes

1. Chandrabhan, (1988), "Population Density Grandient in the cities of Upper Ganga Plain". Unpublishd Ph.D. thsis, University of Gorakhpur, P. 56.
2. Chandrabhan, (1988), op., Cit. P. 57.
3. Gosal. G.S., (1979), op., Cit. P. 51.
4. Gupta, Ravindra (1981), Census of India Part 11-8, Uttar Pradesh Primary Census abs tact.
5. Gosal. G.S., (1979), op., Cit. P. 51.
6. Clark. Jone, I (1972) Population Geography Pargaman press, oxford.
7. Gosal. G.S., (1979), "Spactial perspective on literacy in India", population Geography, Vol. 1 Niond 2, p 41.
8. लाल0 यच0 (1986–89) ''जनसंख्या भूगोल वसुन्धरा प्रकाशन, पेज 173''।
9. लाल0 यच0 (1986–89) पेज 174।
10. लाल0 यच0 (1986–89) पेज 174।

नोट– सिद्धार्थ नगर जनपद में साक्षरता प्रतिरूप के लिए सन् 2001 तक के आकड़ों का प्रयोग किया गया हैं। आगे इस पर आकड़ों को एकत्रित करने का कार्य हो रहा पूरा हो जाने पर सम्मिलित किया जायेगा।